भाषा और साक्षरता

अनुश्रवण करना और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देना

भारत में विद्यालय आधारित
समर्थन के माध्यम से
शिक्षक शिक्षा
www.TESS-India.edu.in

CC BY SA
http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid
from the British people

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के छात्र –केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने छात्र–छात्राओं के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)* / मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त-पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL15v1
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है.
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप अपने छात्र–छात्राओं के भाषा और साक्षरता विकास के अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने के तरीकों को जानेंगे। आप यह सीखेंगे कि किस तरह सतत् अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) आपको आपके छात्र–छात्राओं की प्रगति के बारे में मूल्यवान जानकारी दे सकता है, और किस तरह ये जानकारी आगे के सीखने की योजना बनाने और सीखने–सिखाने में सहायक हो सकते है।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- नियमित अनौपचारिक अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के अवसरों को अपने भाषा पाठों में किस प्रकार शामिल करें।
- सीखने की योजनाओं में छात्र–छात्राओं के आकलन के प्रभावों पर किस प्रकार विचार करें।
- छात्र–छात्राओं को किस प्रकार स्वतः और साथी द्वारा आकलन में शामिल करें।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्वपूर्ण है

परीक्षाओं से वर्ष में एक या दो बार छात्र–छात्राओं की उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलती है और आमतौर पर वे उनके पठन और लेखन कौशलों पर केंद्रित होती हैं। हालांकि, प्रत्येक पाठ में आपके छात्र–छात्राओं की प्रगति की अनुश्रवण करने, आकलन करने और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने के अवसर उपलब्ध होते हैं। इस सन्दर्भ में प्रतिपुष्टि (फीडबैक) का अर्थ है किसी विशिष्ट शिक्षण उद्देश्य के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं को उनके प्रदर्शन की जानकारी देना और इस बारे में उनका मार्गदर्शन करना कि वे किस तरह इसमें सुधार कर सकते हैं या आगे बढ़ सकते हैं।

अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) छात्र–छात्राओं के सीखने, बोलने, पढ़ने और लिखने के विकास के कई पहलुओं से संबंधित हो सकते हैं। अपने छात्र–छात्राओं के बारे में सतत जानकारी एकत्र करके और किन छात्र–छात्राओं को कठिनाई हो रही है या कौन-से छात्र आगे की चुनौतियों के लिए तैयार हैं, इसकी पहचान करके आप कक्षा में हर किसी की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए अपने सीखने–सिखाने की योजना में बदलाव कर सकते हैं। इस इकाई में आपको बताया गया है कि किस तरह सीखना–सिखाना, अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने की प्रक्रिया को आपके नियमित कक्षा अभ्यास में एकसाथ किया जा सकता है।

1 अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के बारे में दृष्टिकोण और अभ्यास

अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के बारे में आपका दृष्टिकोण और अभ्यास क्या हैं? यह जानने के लिए गतिविधि 1 को आज़माकर देखें।

गतिविधि 1: दृष्टिकोण और अभ्यास

एक सहकर्मी के साथ मिलकर निम्नलिखित कथनों को पढ़ें। तय करें कि क्या आप उनसे पूरी तरह या आंशिक रूप से सहमत या असहमत हैं। अपने विचारों के लिए कारण दें।

- छात्र–छात्राओं को परीक्षाएँ चिंताजनक और तनावपूर्ण लगती हैं। इसके कारण उनका प्रदर्शन उनकी क्षमता से कम हो सकता है।
- जाँच और परीक्षाएँ अक्सर सीखने की अवधि के अंत में ली जाती हैं और आमतौर पर इनके लिए प्रतिपुष्टि (फीडबैक) नहीं दिया जाता। इसका अर्थ यह है कि उनके परिणामों पर यथाआवश्यक एवं लगातार कार्रवाही नहीं की जा सकती।
- जाँच और परीक्षाएँ भाषा सीखने के पहलुओं का आकलन करती हैं, जैसे बोध, व्याकरण और शब्दावली आदि लेकिन इनमें सुनने या बोलने का आकलन नहीं होता।
- आमतौर पर शिक्षक/शिक्षिका अपने पाठों के दौरान इतने ज्यादा व्यस्त होते हैं कि वे उसके साथ-साथ अपने छात्र–छात्राओं के अनुश्रवण के लिए समय नहीं दे पाते।
- छात्र अक्सर उनके कार्य के बारे में दिए जाने वाले प्रतिपुष्टि (फीडबैक) को अनदेखा कर देते हैं। उनकी रुचि केवल उनके कुल ग्रेड में होती है।
- आकलन के रिकॉर्ड रखना समय लेने वाला काम हो सकता है। इसके अलावा, रिकॉर्ड हमेशा ही छात्र–छात्राओं की क्षमताओं का वास्तविक चित्र प्रस्तुत नहीं करते।

ज़रा सोचिये

- आपके स्वयं के कक्षा अभ्यास के लिए उपरोक्त कथनों पर आपकी प्रतिक्रिया के प्रभाव क्या हैं? इन बिंदुओं पर ध्यान देने के लिए आप क्या परिवर्तन कर सकते हैं?
- अपने छात्र–छात्राओं का आकलन करते समय आप किस जानकारी को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं?

2 अपनी कक्षा का अनुश्रवण करना

गतिविधि 2: अनुश्रवण करना और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देना

संसाधन 1, 'अनुश्रवण करना और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देना' पढ़ें। जब आप दस्तावेज़ को पढ़ें, तो साथ ही उस पर टिप्पणी लिखें, जो विचार आप अपने से ही क्रियान्वित कर रहे हैं, जो विचार आपको आकर्षित करते हैं और आप जिन्हें आसानी से लागू कर सकते हैं। यदि आपके मन में कोई प्रश्न हैं, तो उन्हें दर्ज करें। यदि संभव हो, तो किसी सहकर्मी के साथ मिलकर यह काम करें और अपनी टिप्पणियों की तुलना करें।

वीडियो: अनुश्रवण करना और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देना

अगली दो गतिविधियाँ अलग–अलग दिनों पर की जानी चाहिए। आपको उद्देश्यपूर्ण अनुश्रवण के लिए आमंत्रित किया जाता है कि जब आप आपके छात्र अपना काम कर रहे हों।

गतिविधि 3: पूरी कक्षा का अनुश्रवण करना

चित्र 1: पूरी कक्षा का अनुश्रवण करना।

अपने छात्र–छात्राओं को स्वतंत्र रूप से बैठकर करने के लिए कोई वर्ग–कार्य दें। समय अवधि 15 मिनट होगी। एक संक्षिप्त पाठ्यपुस्तक-आधारित पठन या लेखन गतिविधि इसके लिए बेहतर रहेगी। जब आपके छात्र–छात्रा अपना काम कर रहे हों, तो पीछे खड़े रहकर उनका अवलोकन करें। निम्नांकित प्रश्नों पर विचार करें:

- छात्र–छात्रा किस तरह के काम कर रहे थे?
- क्या उनमें से कोई अनिश्चिय की स्थिति में लग रहा था कि उसे क्या करना है? आपको कैसे पता?
- क्या छात्र–छात्राओं की काम करने की गति अलग–अलग है? आप किस तरह बता सकते हैं?
- अपना काम जल्दी पूरा कर लेने वाले छात्र–छात्रा उसके बाद क्या कर सकते हैं?
- क्या आपको ऐसा लगता है कि कुछ छात्र–छात्रा अपना काम दिए गए समय में पूरा नहीं कर सकेंगे? उनकी किस प्रकार सहायता की जा सकती है?
- आपने छात्र–छात्राओं के लिए जो काम निर्धारित किए हैं, उनसे आप छात्र–छात्राओं के सीखने का मूल्यांकन कैसे करेंगे?

गतिविधि 4: समूहों का अनुश्रवण करना

चित्र 2: समूहों की अनुश्रवण करना।

अपनी कक्षा को पाँच या छः छात्र–छात्राओं के समूहों में बाँटें और उनसे बातचीत-आधारित एक संक्षिप्त कार्य करने को कहें। इसमें किसी चित्र के आधार पर एक कहानी बनाना या किसी समस्या अथवा विवादास्पद प्रश्न का उत्तर देना शामिल हो सकता है। समूह चर्चा 15 मिनट से ज्यादा समय की नहीं होनी चाहिए। अपने छात्र–छात्राओं को याद दिलाएँ कि उन्हें किस तरह एक-दूसरे के साथ विनम्रतापूर्वक, बारी-बारी से और एक-दूसरे की बात सुनते हुए काम करना है।

कक्षा में घूमते रहें और अपने छात्र–छात्राओं का अवलोकन करें व उनकी बातें सुनें।

निम्नांकित प्रश्नों पर विचार करें:

- आपके छात्र–छात्रा किस तरह के काम कर रहे थे?
- क्या वे आपके निर्देशों को समझ रहे थे? आप किस तरह बता सकते हैं?
- उन्होंने इस कार्य के लिए खुद को कैसे व्यवस्थित किया है?
- क्या उन्हें अतिरिक्त सहायता की ज़रुरत है? यदि हाँ, तो किस तरह की सहायता?
- क्या कोई छात्र–छात्रा चुपचाप बैठे रहे?
- क्या कोई छात्र–छात्रा विशेष रूप से आत्मविश्वासी हैं?
- आप कार्य में अपने छात्र–छात्राओं की सहभागिता और इससे उनके सीखने का मूल्यांकन किस तरह करेंगे?

ज़रा सोचिये

गतिविधि 3 और 4 में आपके छात्र–छात्रा व्यक्गित या समूह में भाषा और साक्षरता आधारित कार्य करते हैं, तब आप उनका अवलोकन और अनुश्रवण करें।

- इन दोनों अवलोकन कार्यों की तुलना किस प्रकार की जा सकती है?
- अकेले या समूह में आपके छात्र–छात्राओं का अवलोकन करना कितना सरल था?
- ऐसा करके आपने क्या सीखा?
- आप इस जानकारी को कैसे दर्ज कर सकते हैं?

ध्यानपूर्वक अनुश्रवण करना एक प्रभावी शिक्षक का मुख्य गुण है, क्योंकि इससे उन्हें यह समझने में मदद मिलती है कि उनके द्वारा निर्धारित कार्यों से उनके छात्र–छात्राओं को किस हद तक सीखने में लाभ हो रहा है।

चाहे ऐसा अनुश्रवण में पूरी कक्षा, छोटा समूह या अकेले-अकेले छात्र–छात्रा शामिल हों, निम्नलिखित प्रश्न शिक्षक/शिक्षिका के मन में सबसे पहले आना चाहिए: छात्र–छात्रा इस पाठ से किस तरह का अनुभव कर रहे हैं और क्या समझ रहे हैं?

3 छात्र–छात्राओं के आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के अलग अलग तरीके

केस स्टडी 1 में, आप छात्र–छात्राओं के आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के बारे में दो शिक्षकों के तरीकों के बारे में पढ़ेंगे।

केस स्टडी 1: छात्र–छात्राओं के आकलन और फीडबैक के बारे में दो शिक्षकों के तरीके

सुश्री अंजुम कैमूर (बिहार) एक ग्रामीण विद्यालय में कक्षा चार की शिक्षिका हैं।

हाल ही में मैं 'बिल्ली का पँजा' (कोंपल, भाग 2) को पढ़ाना खत्म किया।

मैंने इसके फॉलो अप के लिए छात्र–छात्राओं की वर्तनी कौशल की जाँचना करनी चाही। मैंने पाठ से दस कठिन शब्द ब्लैकबोर्ड पर लिखे और छात्र–छात्राओं से कहा कि वे अपनी कॉपी में उनकी नकल करें और कल जाँच के लिए तैयार रहें।

अगली सुबह, मैंने एक-एक करके वे शब्द पढ़े और छात्र–छात्राओं से उन्हें लिखने को कहा। मैंने उनकी कॉपियां लीं, जाँचा और कॉपियां उन्हें लौटा दीं।

कई छात्र–छात्राओं को पूरे अंक मिले थे। कुछ छात्र–छात्राओं ने वर्तनी की गलतियाँ कीं और उन्हें अंक भी कम मिले। मैंने छात्र–छात्राओं से कहा कि जिन्हें सबसे ज्यादा अंक मिले हैं, वे अपने हाथ खड़े करें, इसके बाद जिन्हें कम मिले हैं, वे करें। जिन लोगों का प्रदर्शन कम अच्छा रहा था, मैंने उनसे कहा कि वे घर में फिर से इन शब्दों को लिखने का अभ्यास करें।

श्री रंजन कुमार, सीवान (बिहार) कक्षा पाँच के शिक्षक हैं।

पिछले कुछ पाठों में मेरे छात्र–छात्राओं ने जो शब्द पढ़े थे, मैं उन शब्दों के लिए उनके वर्तनी का आकलन करना चाहता था। मैंने उनसे कहा: 'आज हम श्रुतिलेख गतिविधि करेंगे।'

फिर मैंने छात्र–छात्राओं को चार के समूहों में काम करने को कहा। मैंने उन्हें समझाया कि मैं पाँच छोटे वाक्य पढ़कर सुनाऊंगा और लिखना शुरू करने से पहले उन्हें हर वाक्य को ध्यान से सुनना होगा। मैंने भरोसा किया कि हर कोई मेरे निर्देशों को समझ गया है। इसके बाद मैंने कुछ वाक्य पढ़कर सुनाए और उन वाक्यों को लिखने के लिए छात्र–छात्राओं को समय दिया।

जब उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया, तो मैंने अपने छात्र–छात्राओं से कहा कि वे अपने समूहों के अन्य सदस्यों के साथ अपने वाक्यों पर चर्चा करें, उनके कार्य के साथ तुलना करें और यदि ज़रूरी हो, तो सुधार करें। अंत में, मैंने उनसे कहा कि

वे अपने वाक्यों की तुलना ब्लैकबोर्ड पर मेरे लिखे वाक्यों से करें।

इस गतिविधि के दौरान, मैंने कक्षा में घूमकर अवलोकन किया कि कौन चर्चा में भाग ले रहा है, किसने अपने वाक्य पहली ही बार में सही तरीके से लिख लिए और किन छात्र–छात्राओं को अपना काम बाद में सुधारना पड़ा। मैंने अपने ये अवलोकन अपनी आकलन पुस्तिका में दर्ज किया।

अगले दिन, मैंने पूरी कक्षा को बताया कि पिछले दिन हुई गतिविधि के दौरान मुझे वर्तनी से जुड़ी किन विशिष्ट समस्याओं का पता चला है। मैंने ऐसा करके यह सुनिश्चित किया कि जिन छात्र–छात्राओं को उस कार्य में कठिनाई महसूस हुई थी, वे इसे कमज़ोरी उजागर करना न समझें।

अब मैं हर विषय के बाद इस तरह की एक गतिविधि करता हूँ। मेरे छात्र–छात्रा भी इसके लिए उत्सुक दिखाई देते हैं। मुझे पता चला है कि यदि हर समूह में उच्च स्तर की उपलब्धि वाले एक छात्र को शामिल किया जाए, तो यह सबसे ज्यादा प्रभावी होता है, क्योंकि वे छात्र समूह के दूसरे छात्र–छात्राओं की सहायता कर सकते हैं।

ज़रा सोचिये

- अपने छात्र–छात्राओं की वर्तनी क्षमता के आकलन के लिए सुश्री अंजुम और श्री रंजन कुमार के अलग-अलग तरीकों के बारे में आपकी प्रतिक्रियाएँ क्या हैं?
- आपके अनुसार प्रत्येक तरीके के लाभ और हानियाँ क्या हैं?
- इनमें से कौन-सा तरीका आपके वर्तमान कक्षा अभ्यास को सबसे अच्छी तरह व्यक्त करता है?

सुश्री अंजुम के आकलन का लाभ यह है कि इसमें बहुत कम समय लगता है। हालांकि, यह जाँच को अन्य शिक्षण से अलग कर देता है और अच्छा प्रदर्शन न करने वाले छात्र–छात्राओं की ओर ध्यान केंद्रित करता है। श्री रंजन कुमार के आकलन का तरीका ज्यादा समय लेता है, लेकिन इस प्रक्रिया में उनके छात्र–छात्राओं को भी शामिल किया जाता है, सीखने के लिए बातचीत को शामिल किया जाता है, जिन्हें वर्तनी में कठिनाई हो उनकी सहायता की जाती है और बाद में उपयोगी प्रतिपुष्टि (फीडबैक) भी दिया जाता है। वर्तनी जाँच भी ज्यादा सार्थक है क्योंकि इसमें शब्दों को वाक्यों में ही शामिल किया गया है, न कि उन्हें सन्दर्भ से बाहर रखकर मूल्यांकन किया जा रहा है। इस पद्धति के परिणामस्वरूप लंबी अवधि में सीखने के लाभ मिलने की संभावना ज्यादा है।

4 छात्र–छात्राओं को लेखन संबंधी स्व–आकलन के लिए प्रोत्साहित करना

पारंपरिक रूप से, सीखने के आकलन को पूरी तरह शिक्षक की ज़िम्मेदारी माना जाता रहा है। हालांकि, कई देशों में शिक्षक/शिक्षिका अब यह महसूस करने लगे हैं कि छात्र–छात्राओं को भी उनकी स्वयं की प्रगति के मूल्यांकन में शामिल किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। स्वतः अनुश्रवण या स्वतः आकलन छात्र–छात्राओं में अपने खुद के कार्य का मूल्यांकन करने और इसे सुधारने के तरीकों की पहचान करने पर आधारित होता है।

अब केस स्टडी 2 पढ़ें।

केस स्टडी 2: एक 'मार्किंग लैडर' का उपयोग करना

सुश्री नीतू पटना में एक शिक्षिका हैं। यहाँ वे एक स्व–आकलन के उपकरण (tool) के बारे में बता रही हैं, जिसका उपयोग उन्होंने अपने कक्षा पाँच के छात्र–छात्राओं के साथ सफलतापूर्वक किया है।

एक सीखने–सिखाने से संबंधित प्रकाशित सामग्री पढ़ते समय मुझे 'मार्किंग लैडर' की अवधारणा का पता चला। मैंने अपने

छात्र–छात्राओं के साथ इसे आज़माना चाहा। एक मार्किंग लैडर में, छात्र मेरे साथ मिलकर अपने लेखन के एक अंश का आकलन करते हैं। मैं सीखने के उद्देश्य निर्धारित करती हूँ और हम दोनों मिलकर तय करते हैं कि उन्हें पूरा किया गया या नहीं। [एक उदाहरण सारणी 1 में दर्शाया गया है।]

सारणी 1: *एक कल्पनाशील कहानी लेखक का आकलन करने वाली मार्किंग लैडर का एक उदाहरण।* (*Symons and Currans, 2008 से लिया गया*)

छात्र का नाम	क्रीत प्रसाद
कक्षा	पाँच
लेखन कार्य	कल्पनाशील कहानी लेखन

छात्र	**लेखन उद्देश्य**	**शिक्षक**
✓	मेरी कहानी एक काल्पनिक स्थान या समय पर आधारित है।	✓
	इसमें वर्णन किया गया है कि क्या देखा या सुना या छुआ जा सकता है।	✓
	इसमें करने-मानने वाले पात्र हैं।	✓ आपकी कहानी में ऐसे ज्यादा पात्र हो सकते हैं। शायद कोई काल्पनिक पक्षी?
✓	मैंने जादू के रूप में स्पेशल इफेक्ट्स का उपयोग किया।	✓
मुझे मालूम नहीं है कि ये कैसे किया जाता है। मैंने कोशिश की।	मैंने कुछ शब्द बनाकर उनका उपयोग किया।	आपकी कोशिश अच्छी थी। चिंता मत कीजिए, हम इस बारे में बात कर सकते हैं।
✓	मैंने वातावरण तैयार करने के लिए विशेषणों का उपयोग किया।	✓ थोड़े ज्यादा होते तो अच्छा होता।
मैं अपनी कहानी में सुधार लाने के लिए मैं क्या कर सकता/ती हूँ	मुझे अपनी कहानी कई बार पढ़नी पड़ती है। मुझे अपनी वर्तनी के बारे में ज्यादा ध्यान देना चाहिए। मुझे बनाए गए शब्दों के बारे में सीखना चाहिए। अपनी कहानी लिखने से पहले मुझे इसके बारे में सोचना चाहिए।	

एक मार्किंग लैडर के साथ, छात्र पहले खुद का आकलन (बायाँ स्तंभ) मेरे द्वारा निर्धारित किए गए शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार करते हैं। इसके बाद मैं उनके कार्य का आकलन करती हूँ और उन्हें संक्षेप में लिखित फीडबैक (दायाँ स्तंभ) देती हूँ। इसके बाद वे लिखते हैं कि आगे उनकी क्या करने की योजना है (अंतिम पंक्ति)। इस प्रक्रिया में छात्र–छात्राओं को उनकी प्रगति की अनुश्रवण में शामिल किया जाता है। इससे उन्हें पढ़ने और लिखने का अतिरिक्त अभ्यास भी मिलता है।

मैंने आकलन लैडर का उपयोग लेखन विकास के अलग अलग क्षेत्रों में कर सकती हूँ, चाहे वे रचनात्मक हों या जानकारी-आधारित। इसे सभी क्षमताओं वाले छात्र–छात्राओं के साथ, उनके सीखने के उद्देश्यों को इसके अनुसार अनुकूलित करके

कर सकती हूँ।

कभी-कभी मैं बड़े या ज्यादा सक्षम छात्र की छोटे या कम आत्मविश्वासी छात्र के साथ जोड़ी बनाकर उनके कार्य के अंश का एक साथ आकलन करती हूँ। मेरे छात्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में उनकी मार्किंग लैडर रखते हैं, ताकि मैं समय-समय पर उनकी प्रगति की समीक्षा कर सकूँ।

अपने खुद के आकलन में शामिल होना मेरे छात्र–छात्राओं के लिए बहुत प्रेरक है। हमारे दो-तरफा लेखन आदान–प्रदान के कारण मैंने उनके कार्य में सुधार देखा है।

ज़रा सोचिये

- छात्र–छात्राओं और शिक्षकों के बीच इस तरह के संयुक्त आकलन के बारे में आप क्या सोचते हैं? इसके लाभ क्या हैं? इसमें क्या चुनौतियाँ हो सकती हैं?
- मार्किंग लैडर से मिलने वाली जानकारी किस तरह आपके सीखने की योजना में योगदान कर सकती है?

गतिविधि 5: एक मार्किंग लैडर बनाना

मार्गदर्शिका के रूप में सारणी 1 में दिए गए उदाहरण का उपयोग करके लेखन विकास के उन क्षेत्रों के लिए अपनी स्वयं की मार्किंग लैडर बनाएँ, जिनमें आपके छात्र शामिल होते हैं।

सारणी 2 में वर्णात्मक लेखन का आकलन करने वाली एक मार्किंग लैडर की शुरुआत दर्शाई गई है। आपके पाठ के लिए जो भी सबसे ज्यादा उपयुक्त है, आप उसके अनुसार अपनी लैडर को अनुकूलित कर सकते हैं।

सारणी 2: *वर्णनात्मक लेखन का आकलन करने वाली एक मार्किंग लैडर की शुरुआत।*

छात्र का नाम	
कक्षा	
लेखन कार्य	वर्णात्मक लेखन

छात्र	लेखन उद्देश्य	शिक्षक
	जो समझाया जा रहा है, मैं उसे स्पष्ट करता/ती हूँ।	
	मैं कई तरह के विशेषण जोड़ता/ती हूँ।	
	मैं स्पष्ट, सटीक भाषा का उपयोग करता/ती हूँ।	

मैं अपनी कहानी में सुधार लाने के लिए मैं क्या कर सकता/ती हूँ	

जब आप अपनी मार्किंग लैडर बना लेते हैं, तो इसकी फोटोकॉपी करवाकर अपने छात्र–छात्राओं में इसे वितरित करें। यदि संभव हो, तो एक पूरी की गई लैडर का उदाहरण दिखाकर उन्हें समझाएँ कि यह किस तरह काम करती है।

इस लैडर का उपयोग एक महीने या सत्र की अवधि के दौरान करके देखें, और यह सुनिश्चित करें कि आपके सभी छात्र–छात्राओं को उस अवधि के दौरान प्रतिपुष्टि (फीडबैक) दिया जाए।

ज़रा सोचिये

- अपने छात्र–छात्राओं के साथ मार्किंग लैडर के उपयोग का अनुभव आपको कैसा लगा?
- उन्होंने किस तरह की प्रतिक्रिया दी?
- क्या आपको मार्किंग लैडर के उपयोग के कारण उनके भाषा और साक्षरता विकास में कोई सुधार दिखाई दिए?
- आपने इस आकलन तकनीक का उपयोग अपने सीखने की योजना में किस तरह किया?

संसाधन 2, 'प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना', में प्रभावी आकलन अभ्यास के बारे में अधिक जानकारी और सुझाव दिए गए हैं।

वीडियो: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

5 सारांश

यह इकाई अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) गतिविधियों को आपके छात्र–छात्राओं की भाषा कक्षाओं में सतत एकीकृत करने के तरीकों पर केंद्रित है। ऐसे अभ्यास के द्वारा आपके छात्र–छात्राओं में बोलने और लिखने के कौशल के विकास के बारे में आकलन संबंधी जानकारी मिल सकती हैं, जिससे आप प्रत्येक छात्र की और पूरी कक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार अपने शिक्षण प्रक्रिया को अनुकूलित कर सकते हैं। अभ्यास के साथ-साथ सीखना–सिखाना, अनुश्रवण, आकलन और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) का संयोजन कक्षा में आपकी भूमिका का एक स्वाभाविक अंग ही बन जाएगा।

संसाधन

संसाधन 1: अनुश्रवण करना और प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देना

छात्र–छात्राओं के कार्यप्रदर्शन में सुधार करने में लगातार अनुश्रवण करना और उन्हें प्रतिक्रिया देना शामिल होता है, ताकि उन्हें पता रहे कि उनसे क्या अपेक्षित है और उन्हें कामों का पूरा करने पर प्रतिक्रिया प्राप्त हो। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया के माध्यम से वे अपने कार्यप्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं।

अनुश्रवण करना

प्रभावी शिक्षक अधिकांश समय अपने छात्र–छात्राओं की अनुश्रवण करते हैं। सामान्य तौर पर, अधिकांश शिक्षक अपने छात्र–छात्राओं के काम की अनुश्रवण वे कक्षा में जो कुछ करते हैं उसे सुनकर और देखकर करते हैं। छात्र–छात्राओं की प्रगति का अनुश्रवण करना होता है क्योंकि इससे उन्हें निम्नलिखित में मदद मिलती है:

- अधिक ऊँचे ग्रेड प्राप्त करना
- अपने कार्यप्रदर्शन के बारे में अधिक सजग रहना और अपनी सीखने की प्रक्रिया के प्रति अधिक जिम्मेदार होना
- अपनी सीखने की प्रक्रिया में सुधार करना
- प्रादेशिक और स्थानीय मानकीकृत परीक्षाओं में उपलब्धि का पूर्वानुमान करना।

इससे आपको एक शिक्षक/शिक्षिका के रूप में निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद मिलती है:

- कब प्रश्न पूछें या प्रोत्साहित करें
- कब प्रशंसा करें
- चुनौती दें या नहीं
- एक काम में छात्र–छात्राओं के अलग–अलग समूहों को कैसे शामिल करें
- गलतियों के विषय में क्या करें।

छात्र सबसे अधिक सुधार तब करते हैं जब उन्हें उनकी प्रगति के बारे में स्पष्ट और शीघ्र प्रतिक्रिया दी जाती है। अनुश्रवण करने का उपयोग करना, आपको छात्र–छात्राओं को बताना कि वे कैसे काम कर रहे हैं और उनके सीखने की प्रकिया को बेहतर करने में उन्हें किस अन्य चीज की जरूरत है, इस बारे में नियमित प्रतिक्रिया देने में सक्षम करेगा।

आपके सामने आने वाली चुनौतियों में से एक होगी अपने छात्र–छात्राओं की उनके स्वयं के सीखने के लक्ष्यों को तय करने में मदद करना, जिसे स्व-अनुश्रवण भी कहा जाता है। छात्र, विशेष तौर पर, कठिनाई अनुभव करने स्वयं से सीखने की प्रक्रिया का बोझ उठाने के आदी नहीं होते हैं। लेकिन आप किसी परियोजना के लिए अपने स्वयं के लक्ष्य या उद्देश्य तय करने, अपने काम की योजना बनाने, समय सीमाएं तय करने, और अपनी प्रगति की स्व-अनुश्रवण करने में किसी भी छात्र की मदद कर सकते हैं। स्व-अनुश्रवण के कौशल की प्रक्रिया का अभ्यास और उसमें महारत हासिल करना उनके लिए विद्यालय और उनके सारे जीवन में उपयोगी साबित होगा।

छात्र–छात्राओं की बात सुनना और अवलोकन करना

अधिकांश समय, शिक्षक स्वाभाविक रूप से छात्र–छात्राओं की बात सुनते और उनका अवलोकन करते हैं; यह अनुश्रवण करने का एक सरल साधन है। उदाहरण के लिए, आप:

- अपने छात्र–छात्राओं को ऊँची आवाज में पढ़ते समय सुन सकते हैं
- जोड़ियों या समूहकार्य में चर्चाएं सुन सकते हैं
- छात्र–छात्राओं को कक्षा के बाहर या कक्षा में संसाधनों का उपयोग करते देख सकते हैं
- समूहों के काम काम करते समय उनकी शारीरिक भाषा का अवलोकन कर सकते हैं।

सुनिश्चित करें कि आप जो विचार एकत्रित करते हैं वे छात्र–छात्राओं के सीखने की प्रक्रिया या प्रगति का सच्चा प्रमाण हो। सिर्फ वही बात रिकार्ड करें जो आप देख सकते हैं, सुन सकते हैं, उचित सिद्ध कर सकते हैं या जिस पर आप विश्वास कर सकते हैं।

जब छात्र काम करें, तब कमरे में घूमें और संक्षिप्त अवलोन नोट्स बनाएं। आप कक्षा सूची का उपयोग करके दर्ज कर सकते हैं कि किन छात्र–छात्राओं को अधिक मदद की जरूरत है, और किसी भी उभरती गलतफहमी को भी नोट कर सकते हैं। इन अवलोकनों और नोट्स का उपयोग आप सारी कक्षा को प्रतिक्रिया देने या समूहों अथवा व्यक्ति विशेष को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिक्रिया देना

प्रतिक्रिया वह जानकारी होती है जो आप किसी छात्र को यह बताने के लिए देते हैं कि उन्होंने किसी घोषित लक्ष्य या अपेक्षित परिणाम के संबंध में कैसा कार्य किया है। प्रभावी प्रतिक्रिया छात्र को:

- जानकारी देती है कि क्या हुआ है
- इस बात का आकलन देती है कि कोई कार्यवाही या काम कितनी अच्छी तरह से किया गया
- मार्गदर्शन देती है कि कार्यप्रदर्शन को कैसे सुधारा जा सकता है।

जब आप हर छात्र को प्रतिक्रिया देते हैं, तब उसे यह जानने में उनकी मदद करनी चाहिए कि:

- वे वास्तव में क्या कर सकते हैं
- वे अभी क्या नहीं कर सकते हैं
- उनका काम अन्य लोगों की तुलना में कैसा है
- वे कैसे सुधार कर सकते हैं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि प्रभावी प्रतिक्रिया छात्र–छात्राओं की मदद करती है। आप नहीं चाहते कि आपकी प्रतिक्रिया के अस्पष्ट या अन्यायपूर्ण होने के कारण सीखने की प्रक्रिया में कोई रूकावट आए। प्रभावी प्रतिक्रिया:

- हाथ में लिए गए काम और छात्र द्वारा सीखी जा रही बात पर **केंद्रित** होती है
- **स्पष्ट और ईमानदार** होती है, और छात्र को बताती है कि उसके सीखने की प्रक्रिया के बारे में क्या अच्छी बात है और उसे कहाँ सुधार करना चाहिए
- **कार्यवाही के योग्य** होती है, और छात्र को ऐसा कुछ करने को कहती है जिसे करने में वे सक्षम होते हैं
- छात्र के समझ सकने योग्य **उपयुक्त भाषा** में दी जाती है
- **सही समय** पर दी जाती है – यदि वह बहुत जल्दी दी गई तो छात्र सोचेगा 'मैं यही तो करने जा रहा था!'; बहुत देर से दी गई तो छात्र का ध्यान और कहीं चला जाएगा और वह वापस लौटकर वह नहीं करना चाहेगा जिसके लिए उसे कहा गया है।

प्रतिक्रिया चाहे बोली जाए या छात्र–छात्राओं की कार्य–पुस्तिकाओं में लिखी जाए, वह तभी अधिक प्रभावी होती है यदि वह नीचे दिए गए दिशानिर्देशों का पालन करती है।

प्रशंसा और सकारात्मक भाषा का उपयोग करना

जब हमारी प्रशंसा की जाती है और हमें प्रोत्साहित किया जाता है तो आमतौर पर हम उस समय की तुलना में काफी अधिक बेहतर महसूस करते हैं, जबकि हमारी आलोचना की जाती है या हमारी गलती सुधारी जाती है। सुदृढ़ीकरण और सकारात्मक भाषा समूची कक्षा और सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए प्रेरणादायक होती है। याद रखें कि प्रशंसा को विशिष्ट और स्वयं छात्र की बजाय किए गए काम पर केन्द्रित होना चाहिए, अन्यथा वह छात्र की प्रगति में मदद नहीं करेगी। 'शाबाश' अविशिष्ट शब्द है, इसलिए निम्नलिखित में से कोई बात कहना बेहतर होगा:

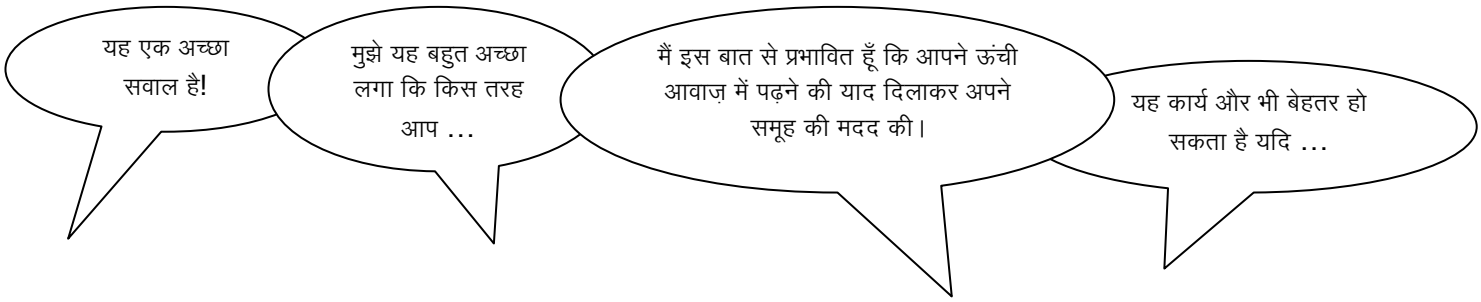

संकेत देने के साथ-साथ सुधार का उपयोग करना

अपने छात्र–छात्राओं के साथ आप जो बातचीत करते हैं वह उनके सीखने की प्रक्रिया में मदद करती है। यदि आप उन्हें बताते हैं कि उनका उत्तर गलत है और संवाद को वहीं समाप्त कर देते हैं, तो आप सोचने और स्वयं प्रयास करने में उनकी मदद करने का अवसर खो देते हैं। यदि आप छात्र–छात्राओं को संकेत देते हैं या आगे कोई प्रश्न पूछते हैं, तो आप उन्हें अधिक गहराई से सोचने को प्रेरित करत`हैं और उत्तर खोजने तथा अपने स्वयं के सीखने का दायित्व लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, आप बेहतर उत्तर के लिए प्रोत्साहित या किसी समस्या पर किसी अलग दृष्टिकोण को प्रेरित करने के लिए निम्नलिखित बातें कह सकते हैं:

दूसरे छात्र–छात्राओं को एक दूसरे की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना उपयुक्त हो सकता है। आप यह काम निम्नलिखित जैसी टिप्पणियों के साथ शेष कक्षा के लिए अपने प्रश्नों को प्रस्तुत करके कर सकते हैं:

छात्र–छात्राओं को हाँ या नहीं के साथ सुधारना वर्तनी या संख्या के अभ्यास की तरह के कामों के लिए उपयुक्त हो सकता है, लेकिन यहां पर भी आप छात्र–छात्राओं को उभरते प्रतिमानों पर नजर डालने या समान उत्तरों से संबंध बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं या चर्चा शुरू कर सकते हैं कि कोई उत्तर गलत क्यों है।

स्वयं सुधार करना और समकक्षों से सुधार करवाना प्रभावी होता है और आप इसे छात्र–छात्राओं से दिए गए कामों को जोड़ियों में करते समय स्वयं अपने और एक दूसरे के काम की जाँच करने को कहकर प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक समय में एक पहलू को सही करने पर ध्यान केंद्रित करना सबसे अच्छा होता है ताकि विनम्र में डालने वाली ढेर सारी जानकारी न हो।

संसाधन 2: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

छात्र–छात्राओं के शिक्षण का मूल्यांकन करने के दो उद्देश्य हैं:

- **योगात्मक मूल्यांकन** (Summative Evaluation) पीछे मुड़ कर देखता है और जो पहले से सीखा गया है उसका निर्णय करता है। यह सामान्यतया परीक्षाओं के स्वरूप में आयोजित किया जाता है, जहाँ छात्र–छात्राओं को परीक्षा में प्रश्नों के प्रति उनकी उपलब्धियों को बताते हुए श्रेणीकृत किया जाता है। इससे परिणामों की रिपोर्टिंग में मदद मिलती है।
- **रचनात्मक मूल्यांकन** या शिक्षण का मूल्यांकन (Formative Evaluation) काफ़ी अलग है, जो अधिक अनौपचारिक तथा नैदानिक स्वरूप का होता है। शिक्षक उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के अंग के रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए, जहाँ यह पता लगाने के लिए प्रश्न पूछने का इस्तेमाल किया जाता है कि क्या छात्र–छात्राओं ने किसी चीज़ को समझा है या नहीं। इस मूल्यांकन के परिणामों का फिर अगले शिक्षण अनुभव को बदलने के लिए उपयोग किया जाता है। अनुश्रवण और फ़ीडबैक निर्माणात्मक मूल्यांकन का हिस्सा है।

रचनात्मक मूल्यांकन शिक्षा-प्राप्ति को बढ़ाता है, क्योंकि सीखने के लिए, अधिकांश छात्र–छात्राओं को:

- समझना चाहिए कि उनसे क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है
- जानना चाहिए कि अपनी पढ़ाई में वे इस समय किस स्तर पर हैं
- समझना चाहिए कि वे किस प्रकार प्रगति कर सकते हैं (अर्थात क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए)
- जानना चाहिए कि कब उन्होंने लक्ष्य और अपेक्षित परिणाम हासिल कर लिए हैं।

शिक्षक के रूप में, अगर आप प्रत्येक पाठ में उपर्युक्त चार बिंदुओं पर ध्यान देंगे, तो आप अपने छात्र–छात्राओं से सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करेंगे। इस प्रकार पढ़ाने से पहले, पढ़ाते समय और पढ़ाने के बाद मूल्यांकन किया जा सकता है:

- **पहले**: पढ़ाने से पहले मूल्यांकन से आपको यह जानने में मदद मिलती है कि छात्र क्या जानते हैं और पढ़ाने से पहले क्या कर सकते हैं। यह आधार-रेखा निर्धारित करता है और आपको अपनी शिक्षण योजना तैयार करने के लिए प्रारंभिक बिंदु देता है। छात्र क्या जानते हैं इस बारे में अपनी समझ को बढ़ाने से, छात्र–छात्राओं को जिसमें पहले से ही महारत हासिल है, उसे दुबारा पढ़ाने या संभवतः उन्हें जो जानना या समझना है (लेकिन नहीं जानते), उसे छोड़ने के मौक़े कम होंगे।
- **पढ़ाते समय**: कक्षा में पढ़ाते समय मूल्यांकन करने में यह देखना शामिल है कि क्या छात्र सीख रहे हैं और उनमें सुधार हो रहा है। इससे आपको अपनी शिक्षण पद्धति, संसाधनों और गतिविधियों का समायोजन करने में मदद मिलेगी। यह आपको यह समझने में मदद करेगा कि छात्र वांछित उद्देश्य की दिशा में किस प्रकार प्रगति कर रहा है और आपका शिक्षण कितना सफल है।
- **पढ़ाने के बाद**: शिक्षण के बाद किया जाने वाला मूल्यांकन पुष्टि करता है कि छात्र–छात्राओं ने क्या सीखा है और आपको दर्शाता है कि किसने सीखा है और किसे अभी मदद की ज़रूरत है। इससे आप अपने शिक्षण लक्ष्य का प्रभावी आकलन कर सकेंगे।

पहले: आपके छात्र–छात्रा क्या सीखेंगे इस बारे में स्पष्ट रहना

जब आप तय करते हैं कि छात्र–छात्राओं को पाठ या पाठों की शृंखला में क्या सीखना चाहिए, तो आपको उसे उनके साथ साझा करना चाहिए। सावधानी से अंतर करें कि छात्र–छात्राओं को आप क्या करने के लिए कह रहे हैं, और छात्र–छात्राओं से क्या सीखने की उम्मीद की जा रही है। ऐसा प्रश्न पूछिये जिससे कि आपको इस बात का आकलन करने का अवसर प्राप्त हो कि क्या उन्होंने वाक़ई समझा है या नहीं। उदाहरण के लिए:

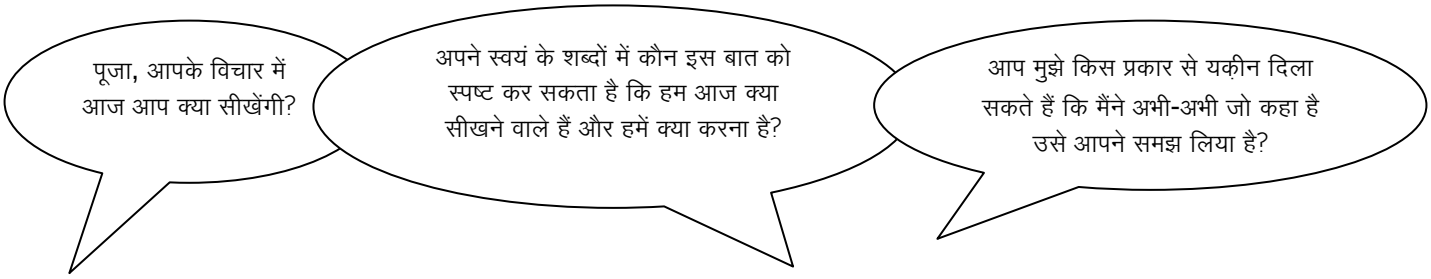

छात्र–छात्राओं को जवाब देने से पहले सोचने के लिए कुछ समय दें, या शायद छात्र–छात्राओं को पहले जोड़े या छोटे समूहों में अपने जवाब पर चर्चा करने को कहें। जब वे आपको अपना उत्तर बताएँ, आप जान जाएँगे कि क्या वे समझते हैं कि उन्हें क्या सीखना है।

पहले: जानना कि छात्र–छात्रा अपने शिक्षण के किस स्तर पर हैं

अपने छात्र–छात्राओं में सुधार के लिए मदद करने के क्रम में आपको और उन्हें उनके ज्ञान और समझदारी की वर्तमान अवस्था को जानने की ज़रूरत पड़ेगी। जैसे ही आप वांछित शिक्षण परिणामों या लक्ष्यों को साझा कर लें, आप निम्न कर सकते हैं:

- छात्र–छात्राओं को मानसिक मानचित्र बनाने या उस विषय के बारे में वे पहले से क्या जानते हैं, उसे सूचीबद्ध करने के लिए जोड़े में कार्य करने के लिए कहें, और उन्हें उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दें, लेकिन उन चंद विचारों के लिए बहुत ज्यादा समय नहीं देना चाहिए। उसके बाद आप उन मानसिक मानचित्र या सूचियों की समीक्षा करें।
- महत्त्वपूर्ण शब्दावली को बोर्ड पर लिखें और प्रत्येक शब्द के बारे में वे क्या जानते हैं, यह बताने के लिए स्वेच्छा से उन्हें आगे आने के लिए कहें। फिर बाक़ी कक्षा से कहें कि यदि वे शब्द समझते हैं, तो अपना अंगूठा थम्ब्स-अप की मुद्रा में ऊपर उठाएँ, यदि वे बहुत कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं, तो थम्ब्स-डाउन की मुद्रा में नीचे करें और यदि वे कुछ जानते हैं, तो अंगूठे को क्षैतिज यानी बीच में रखें।

कहाँ से शुरुआत करनी है, यह जानने का मतलब है कि आप अपने छात्र–छात्राओं के लिए प्रासंगिक और रचनात्मक रूप से पाठ की योजना बना सकते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि आपके छात्र यह मूल्यांकन करने में सक्षम हों कि वे कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं, ताकि आप और वे, दोनों जान सकें कि उन्हें आगे क्या सीखने की ज़रूरत है। आपके छात्र–छात्राओं को स्वयं अपने शिक्षण का भार उठाने का अवसर प्रदान करने से उन्हें आजीवन छात्र बनाने में मदद मिलेगी।

पढ़ाते समय: शिक्षा में छात्र–छात्राओं की प्रगति सुनिश्चित करना

जब आप छात्र–छात्राओं से उनकी वर्तमान प्रगति के बारे में बात करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें आपका प्रतिपुष्टि (फीडबैक) उपयोगी और रचनात्मक, दोनों लगे। निम्नांकित के द्वारा इस काम को करें:

- छात्र–छात्राओं को उनकी ताक़त और यह जानने में मदद करना कि वे कैसे और सुधार कर सकते हैं
- इस बारे में स्पष्ट रहना कि आगे और किस चीज़ के विकास की ज़रूरत है

- इस बारे में सकारात्मक रहना कि वे किस प्रकार अपनी शिक्षा का विकास कर सकते हैं, जाँचना कि वे समझते हैं और आपकी सलाह का उपयोग करने में सक्षम महसूस करते हैं।

आपको छात्र–छात्राओं के लिए उनके शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए अवसर मुहैया कराने की ज़रूरत पड़ेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाई के मामले में छात्र–छात्राओं के वर्तमान स्तर और जहाँ आप उन्हें देखना चाहते हैं, इसके बीच के कमी को पाटने के लिए हो सकता है कि आपको अपनी सीखने योजना को संशोधित करना पड़े। ऐसा करने के लिए आपको निम्नतः करना होगा:

- कुछ ऐसे कार्य पर वापस नज़र दौड़ाना होगा, जिनके बारे में आपने सोचा था कि वे पहले से जानते हैं
- आवश्यकता के अनुसार छात्र–छात्राओं के समूह बनाना, उन्हें अलग-अलग कार्य देना
- छात्र–छात्राओं को स्वयं यह निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना कि उन्हें किन संसाधनों को पढ़ने की ज़रूरत है ताकि वे 'स्वयं अपना अंतराल पाट सकें'
- 'निम्न प्रवेश, ऊँची सीमा' वाले कार्यों का उपयोग करना, ताकि सभी छात्र प्रगति कर सकें - इन्हें इसलिए अभिकल्पित किया गया है कि सभी छात्र काम शुरू कर सकें, लेकिन अधिक समर्थ को प्रतिबंधित न किया जाए और वे अपने ज्ञान के विस्तार के लिए प्रगति कर सकें।

पाठों की रफ्तार को धीमा करके, अक्सर आप दरअसल पढ़ाई को तेज़ करते हैं, क्योंकि आप छात्र–छात्राओं को उस पर सोचने और समझने का समय और आत्मविश्वास देते हैं, जिसमें उन्हें सुधार लाने की ज़रूरत होती है। छात्र–छात्राओं को आपस में अपने काम के बारे में बात करने का मौक़ा देकर, और इस बात पर चिंतन करके कि कमी कहाँ पर है और वे इसे किस प्रकार से ख़त्म कर सकते हैं, आप उन्हें स्वयं का आकलन करने के तरीक़े मुहैया करा रहे हैं।

पढ़ाने के बाद: प्रमाण एकत्रित करना और उसकी व्याख्या करना, और आगे की योजना बनाना

जब सीखना-सिखाना चल रहा हो और कक्षा-कार्य और गृह-कार्य निर्धारित करने के बाद, ज़रूरी है कि:

- इस बात का पता लगाएँ कि आपके छात्र कितनी अच्छी तरह कार्य कर रहे हैं
- इसे अगले पाठ के लिए अपनी योजना बनाने करने के लिए उपयोग में लाएँ
- छात्र–छात्राओं को प्रतिक्रिया दें।

मूल्यांकन की चार प्रमुख स्थितियों की नीचे चर्चा की गई है।

सूचना या प्रमाण एकत्रित करना

प्रत्येक छात्र, स्वयं अपनी गति और शैली में, स्कूल के अंदर और बाहर अलग–अलग तरीके से सीखता है। इसलिए, छात्र–छात्राओं का मूल्यांकन करते समय आपको दो चीज़ें करनी होंगी:

- विविध सूत्रों से जानकारी एकत्रित करें - स्वयं अपने अनुभव से, छात्र, अन्य छात्र–छात्राओं, अन्य शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों से।
- छात्र–छात्राओं का व्यक्तिगत रूप से, जोड़ों में और समूहों में मूल्यांकन करें, तथा स्व-मूल्यांकन को बढ़ावा दें। अलग विधियों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई एक पद्धति आपके वह सभी जानकारी उपलब्ध नहीं कराती, जिसकी आपको ज़रूरत है। छात्र–छात्राओं के सीखने और प्रगति के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के विभिन्न तरीक़ों में शामिल हैं, देखना, सुनना, विषयों और प्रकरणों पर चर्चा, तथा लिखित वर्ग और गृह-कार्य की समीक्षा करना।

अभिलेखन

भारत भर के सभी विद्यालयों में रिकॉर्डिंग का सबसे आम स्वरूप रिपोर्ट कार्ड के उपयोग के माध्यम से होता है, लेकिन इसमें आपको एक छात्र के सीखने या व्यवहार के सभी पहलुओं को रिकॉर्ड करने की अनुमति नहीं हो सकती है। इस काम को करने के कुछ सरल तरीक़े हैं, जिन पर भी आप विचार कर सकते हैं, जैसे कि:

- सीखने–सिखाने समय जो आप देखते हैं उसे डायरी/नोटबुक/रजिस्टर में नोट करना
- छात्र–छात्राओं के कार्य के नमूने (लिखित, कला, शिल्प, परियोजनाएँ, कविताएँ आदि) पोर्टफ़ोलियो में रखना
- प्रत्येक छात्र का प्रोफ़ाइल तैयार करना
- छात्र–छात्राओं की किन्हीं असामान्य घटनाओं, परिवर्तनों, समस्याओं, शक्तियों और शिक्षण प्रमाणों को नोट करना।

प्रमाण की व्याख्या

जैसे ही सूचना और प्रमाण एकत्रित और अभिलिखित हो जाए, उसकी व्याख्या करना ज़रूरी है, ताकि यह समझ सकें कि प्रत्येक छात्र किस प्रकार सीख रहा है और प्रगति कर रहा है। इस पर सावधानी से विचार करने और विश्लेषण की आवश्यकता है। फिर आपको शिक्षण में सुधार करने, संभवतः छात्र–छात्राओं को फ़ीडबैक देकर या नए संसाधनों की खोज करके, समूहों को पुनर्व्यवस्थित करके, या शिक्षण बिंदु को दोहरा कर अपने निष्कर्षों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

सुधार के लिए योजना बनाना

मूल्यांकन, विशिष्ट और विभेदक शिक्षण गतिविधियों की स्थापना द्वारा प्रत्येक छात्र को सार्थक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करने, अधिक मदद के ज़रूरतमंद छात्र–छात्राओं पर ध्यान देने और अधिक उन्नत छात्र–छात्राओं को चुनौती देते हुए सार्थक शिक्षण अवसर उपलब्ध कराने में आपकी मदद कर सकते हैं।

अतिरिक्त संसाधन

- ‘Using marking ladders to support children’s self-assessment in writing’ by Victoria Symons and Deborah Currans: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Wooler(%20final%20pdf).pdf
- ‘Using marking ladders to support children’s self-assessment of writing’, a poster by Victoria Symons and Deborah Currans: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Yr1Wooler.pdf
- Documentation and reports on continuous assessment in elementary education: http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dee/publication/report.html#

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Graham, J. and Kelly, A. (2010) ‘Monitoring and assessing writing’, Chapter 6 in *Writing under Control: Teaching Writing in the Primary School*. London: Routledge.

Graham, J. and Kelly, A. (2012) ‘Monitoring and assessing reading’, Chapter 4 in *Reading under Control: Teaching Reading in the Primary School*. London: Routledge.

Graves, D. (2003) *Writing: Teachers and Children at Work*. Portsmouth: Heinemann.

Symons, V. and Currans, D. (2008) ‘Using marking ladders to support children’s self-assessment in writing’ (online), Campaign for Learning. Available from: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/Wooler(%20final%20pdf).pdf (accessed 31 October 2014). Additionally, a poster by the same authors is available from: http://www.campaign-for-

learning.org.uk/cfl/assets/documents/
CaseStudies/Yr1Wooler.pdf (accessed 31 October 2014).

Tibetan Teachers Professional Development Website (undated) 'Source Book on Assessment for Classes I–V (Environmental Studies' (online). Available from: http://www.tibetanteachers.com/book-list-assessment/386-source-book-on-assessment-for-classes-i-v-environmental-studies (accessed 19 November 2014).

Walker, M. (2014) 'National assessment in India' (online), Research Developments, Australian Council for Educational Research, 11 March. Available from: http://rd.acer.edu.au/article/national-assessment-in-india (accessed 19 November 2014).

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस इकाई में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोत का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

सारणी 1:साइमंस, वी. और करंस, डी. (2008) के Using marking ladders to support children's self-assessment in writing', शिक्षा अभियान, http://www.campaignforlearning.org.uk से लिया गया। (Table 1: adapted from Symons, V. and Currans, D. (2008) 'Using marking ladders to support children's self-assessment in writing', Campaign for Learning, http://www.campaignforlearning.org.uk.)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।